वर्ष-१२ अंक-११
२७ जुलाई २०१६

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०.०० रु.

ओ३म्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१२ अंक-११

२७ जुलाई २०१६
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १, ९६, ०८, ५३, ११६
विक्रम संवत् २०७३
दयानन्दाब्द १९१

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	4
2.	मुक्ति की चाह नहीं	6
3.	योग	7
4.	गुनाहों का देवता	9
5.	महात्मा हंसराज	10
6.	पं. गुरूदत्त विद्यार्थी	12
7.	भिखारी और नेता	14
8.	ईश्वर	16
9.	शव की परीक्षा	17
10.	पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के.........	18
11.	उपाय...समस्या....आशा...	20
12.	शरीर को निरोग रखने के नियम	22
13.	चिन्ता किसकी और क्यों ?	23
14.	आर्य समाज की गतिविधियां	24
15.	आर्ष ग्रन्थों का पत्राचार से.....	25

अगस्त माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

1	लोकमान्य तिलक पुण्यतिथि
3	डॉ. मैथलीशरण गुप्त जयंती
7	चरक जयंती
9	अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन दिवस
10	गोस्वामी तुलसीदास शहीद दिवस
11	खुदीराम बोस ाहीद दिवस
13	दुर्गादास राठौर जयंती
15	स्वतंत्रता दिवस
16	रानी अवंतीबाई लोधी जयंती
17	मदनलाल धींगरा शहीद दिवस
18	श्रावणी उपाकर्म, रक्षाबंधन पर्व
23	बलदाऊ जयंती
25	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, महर्षि नवल जयंती
29	राष्ट्रीय खेल दिवस
31	अहिल्याबाई होल्कर पुण्यतिथि

सम्पादकीय

राष्ट्र को अपना चश्मा बदलना होगा !

हमारा देश प्रजातन्त्रीय प्रणाली पर चल रहा है जहां अपनी वैचारिक अभिव्यक्ति के लिए स्वतन्त्र हैं। अच्छा है ऐसा होना भी चाहिए, निष्पक्ष व रचनात्मक वैचारिक स्वतन्त्रता समाज व राष्ट्र की श्रेष्ठ व्यवस्था का आधार हो सकती है। अप्रजातान्त्रिक व्यवस्था तानाशाही और शोषण का पर्याय है। इस प्रकार गुलामी, बन्धुआ वैचारिक घुटन की जिन्दगी कही जा सकती है, दूसरी ओर स्वतन्त्रता से पूर्ण जिन्दगी की एक श्रेष्ठ जिन्दगी से की जाना चाहिए।

किन्तु क्या आज इस स्वतन्त्रता का सदुपयोग हो रहा है ? आज लोग प्रायः अपनी इस वैचारिक स्वतन्त्रता का उपयोग उत्साह वर्धन, योग्य निष्पक्ष सलाह, रचनात्मक दृष्टिकोण से नहीं हो रहा है।

आज अपनी वैचारिक स्वतन्त्रता का उपयोग छिद्रादोषण करने में, किसी की सही बात को भी असत्य सिद्ध करने में, किसी हितकारी कार्य की भी छीछालेदर करके उसकी हानियों को बताने में कर रहे हैं। इस स्वतन्त्रता का स्तर इतना गिर गया है कि जिस राष्ट्र में जन्म लिया, जिसकी हवा, पानी का उपयोग किया, जिसकी माटी में पले, बड़े हुए उसके विरोध में भी नारे लगाकर अपने राष्ट्रद्रोही होने का प्रमाण प्रस्तुत करने लगे। राष्ट्रद्रोहियों की जय–जयकार कर राष्ट्र का वातावरण दूषित करने में लग गए। क्या यही स्वतन्त्रता हितकारी है, यह स्वतन्त्रता तो विनाशकारी सिद्ध हो रही है। वास्तव में यह स्वतन्त्रता स्वच्छन्दता में परिवर्तित होते जा रही है।

सीमा में रहते हुए समुद्र समस्त प्राणियों के जीवन का आधार है वहीं बादलों को पानी देता है जिससे जनजीवन का अस्तित्व है। किन्तु सीमा के उल्लंघन होने पर जब वही समुद्र सुनामी के रूप में सामने खड़ा हो जावे तो विनाशकारी हो जाता है।

ठीक इसी प्रकार वैचारिक स्वतन्त्रता जब सीमा में तथा निष्पक्ष होती है तब तक रचनात्मक और सीमा के बाहर होने पर विध्वंस, विवाद व विनाश का कारण बन जाती है। इसलिए मानव रक्षा, राष्ट्र रक्षा के लिए इस पर नियन्त्रण होना आवश्यक है।

दुनिया का कौन व्यक्ति है जो स्वच्छता को पसन्द न करके गन्दगी को अपनाना चाहता हो। निश्चित ही सभी स्वच्छता को चाहते हैं इसलिए स्वच्छ कपड़े पहनते हैं मकान स्वच्छ रखते हैं, खाने पीने में स्वच्छता चाहते हैं, मोहल्ला, गली स्वच्छ चाहते हैं, चूंकि स्वच्छ देश का नारा देश के प्रधानमन्त्री ने दिया जो एक राजनैतिक पार्टी विशेष के व्यक्ति हैं, इसलिए पूरे देश ने इस महत्वपूर्ण जीवनोपयोगी घोषणा का स्वागत नहीं किया, सभी ने मोदी जी को धन्यवाद नहीं दिया। यह न कर सके तो भी क्षम्य है किन्तु कुछ राष्ट्र विरोधी तत्वों ने तो इसका मजाक भी उड़ा दिया।

बिहार के मुख्यमन्त्री श्री नितिश कुमार ने शराब बन्दी कर दी। यह निर्णय सामाजिक हित में स्वागत योग्य है एक साहसिक कदम है इस कारण मुख्यमन्त्री साधुवाद के पात्र हैं। किन्तु कितने व्यक्तियों ने उनके इस कदम का समर्थन कर उनका उत्साहवर्धन किया। यहां वैचारिक स्वतन्त्रता नहीं की जाती।

जे एन यू में स्वतन्त्रता की सीमा तोड़कर राष्ट्र विरोधी नारे लगाए गए। यह एक खुली राष्ट्र के प्रति बगावत है, निन्दनीय व शर्मनाक घटना है। यह वैचारिक स्वतन्त्रता का स्पष्ट रूप से दुरूपयोग है, स्वच्छन्दता है। किन्तु इस शर्मनाक घटना को स्वार्थ की रोटी सेंकने वाले अनदेखा कर उसको पल्लवित करने में लगे हैं। यह भी अपने आप में वैचारिक स्वतन्त्रता का दुरूपयोग ही है।

प्रधानमन्त्री की व्यवहार व कार्य कुशलता के कारण अनेक देश भारत के मित्र देश हो गए। सक्षम, प्रभावशाली से मित्रता आपकी गरिमा बढ़ाती है। हाल ही में मिसाइल से संबंधित पात्रता भारत को **एम टी सी आर** की सदस्यता प्राप्त हुई है जो चीन, पाकिस्तान जैसे देशों को कई प्रयास के बाद भी नहीं मिला। किन्तु राष्ट्र की इस उपलब्धि की सराहना के लिए वैचारिक स्वतन्त्रता के पास शब्द नहीं हैं, किन्तु पाकिस्तान से समझौता करने के प्रयास की निन्दा की जा रही है। यह संकुचित विचारधारा का परिणाम है, संकुचित विचारधारा हतोत्साहित करती है।

इसलिए समग्र विकास के लिए राष्ट्र को अपनी ऑखों पर से वो चश्मा हटाना पड़ेगा जिसमें केवल बुराईयां–बुराईयां ही दिखती हैं, उसके स्थान पर ऐसा चश्मा पहनना होगा जिसमें यथार्तता दिखती हो।

नेत्रहीनो यथा हि एकः कृच्छ्राणि लभतेऽध्वनि।
ज्ञानहीनस्तथा लोके, तस्माज्ज्ञानविदोऽधिकाः।।

अर्थ – जैसे नेत्रहीन मनुष्य मार्ग में अनेक कष्ट पाता है, वही स्थिति इस संसार में ज्ञानरहित मनुष्य की होती है, इसीलिए ज्ञानी मनुष्यों को अधिक श्रेष्ठ माना गया है।

अनन्यासेन वेदानामाचारस्य च वर्जनात्।
आलस्यादन्नदोषाच्च, मृत्युर्विप्रांजिघासति।। मनु. 5/4

अर्थात् वेदाभ्यास को अनदेखा करने वाला आचार–विचार से पतित होकर आलसी, प्रमादी, दोषी, अन्न ग्रहण करने का दोष प्राप्त करता है और बिना वेद के ब्राह्मण तो मृतप्रायः है।

महर्षि दयानन्द ....

मुक्ति की चाह नहीं

महाराज कर्म–धर्म को अति प्रधानता देते थे। परहितार्थ क्रियात्मक जीवन को सर्वोत्तम जीवन मानते थे। गंगातट पर एक वृद्ध महात्मा ने स्वामीजी से कहा– बच्चा, यदि आप पहले से ही निवृत्ति मार्ग पर स्थिर रहते, परोपकार के झगड़े में न पड़ते तो आपकी इसी जन्म में मुक्ति हो जाती। अब तो आपको एक और जन्म धारण करना पड़ेगा।

स्वामीजी ने कहा अब मुझे अपनी मुक्ति की चिन्ता नहीं, लाखों मनुष्यों की मुक्ति की चिन्ता मुझे चलायमान कर रही है। उनकी मुक्ति हो जाय, मुझे क्यों न अनेक जन्म धारण करने पड़े। दुःखों के त्रास से, दीन दशा से, और दुर्बल अवस्था से परमपिता के पुत्रों को मुक्ति दिलाते तो मैं आप ही आप मुक्त हो जाऊंगा।

बम्बई में विषपान का प्रयास

प्रयाग में जब स्वामीजी धर्म गंगा में नहा रहे थे तब बम्बई से कई निमन्त्रण आये तो स्वामीजी जबलपुर, नासिक होते हुए आश्विन सुदी 12 सं. 1931 को बम्बई पहुंच गये। यहां आगमन से पूर्व ही स्वामीजी की प्रसिद्धि हो चुकी चुकी थी। बम्बई रेलवे स्टेशन पर स्वागत में अनेक भद्रपुरूष उपस्थित थे। स्वामीजी समदृष्टि थे अतः किसी से विरोध न कर पन्थों की पोल खोलने में पक्षपात नहीं करते थे। मतवादियों में इससे भारी व्याकुलता पैदा हो गई। एक दिन जीवन गुंसाई ने बलदेव सेवक को विष देने के लिये कहा और एक सहस्त्र रूपया देने को कहा। जीवन ने एक सहस्त्र रूपया देने हेतु एक पत्र भी दिया, साथ में मिठाई भी दी। स्वामीजी ने बलदेव से पूछा की आज तुम गोकुलियों के यहां गये थे और क्या ठहराकर आये हो, उसने सच–सच सारी बात बता दी। देखो जिसे परमेश्वर न मारे उसे मारने के लिये कोई समर्थ नहीं हो सकता। बनारस में भी मुझे हलाहल विष दिया गया। अन्य स्थानों पर भी मेरे उपर विष के प्रयोग किये गये, मेरा प्राणान्त न हुआ। स्वामीजी के इस रहस्योद्‌घाटन से बलदेव घबरा गया और बलदेव ने क्षमा मांगी।

इसी प्रकार एक दिन स्वामीजी के बध करने के लिये दो व्यक्ति मकान में घुस आये तो स्वामीजी ने उन्हें ललकारा तो वह तुरन्त भाग गये।

पुनः जीवन में चार व्यक्ति मारने के लिये तैयार किये, एक दिन वह सामने से आ रहे थे। स्वामीजी ने पहचान कर कहा, तुम मुझे मारने आ रहे हो। वह डरकर भाग गये।

योग

– आचार्य ज्ञानेश्वार्य, रोजड़

प्रश्न 393 : मनुष्य जीवन का मुख्य लक्ष्य क्या है ?

उत्तर : समस्त दुःखों से छूटना व पूर्ण आनन्द की प्राप्ति करना।

प्रश्न 394 : मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति कैसे होगी ?

उत्तर : योग का अनुष्ठान करने से मनुष्य जीवन के मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 395 : योग किसे कहते है ?

उत्तर : मन में सांसारिक विचारों को तथा अनावश्यक विचारों को रोक कर मन, बुद्धि आदि प्राकृति से बने पदार्थों का या आत्मा का या ईश्वर का अनुभव करना योग कहलाता है।

प्रश्न 396 : योगाभ्यास में सफलता के लिए क्या करना होता है ?

उत्तर : योगाभ्यास में सफलता के लिए योग के अंगों का श्रद्धापूर्वक नियमित पालन करना होता है।

प्रश्न 397 : योग के कितने अंग हैं और कौन–कौन से ?

उत्तर : योग के आठ अंग हैं – यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि।

प्रश्न 398 : यम किसे कहते हैं ?

उत्तर : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह नामक पांच कर्तव्यों का पालन करना यम कहलाता है।

प्रश्न 399 : नियम किसे कहते हैं ?

उत्तर : शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान नामक पॉच कर्तव्यों का पालन करना नियम कहलाता है।

प्रश्न 400 : अहिंसा किसे कहते हैं ?

उत्तर : शरीर, वाणी तथा मन से सब काल में समस्त प्राणियों के साथ वैरभाव (द्वेष) छोड़कर प्रेमपूर्वक व्यवहार करना "अहिंसा" कहलाती है।

प्रश्न 401 : अहिंसा के पालन करने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर : अहिंसा धर्म का पालन करने वाले व्यक्ति के मन में समस्त प्राणियों के प्रति वैर भाव (द्वेष) छूट जाता है, तथा उस अहिंसक के सत्संग एवं उपदेशानुसार आचरण करने से अन्य व्यक्तियों का भी अपनी–अपनी योग्यतानुसार वैर–भाव छूट जाता है।

प्रश्न 402 : सत्य किसे कहते हैं ?

उत्तर : जैसा देखा हुआ, सुना हुआ, पढ़ा हुआ, अनुमान किया हुआ ज्ञान मन है, वैसा ही वाणी सब के हित के लिए बोलना और शरीर से आचरण में लाना 'सत्य' कहलाता है।

प्रश्न 403 : सत्य के पालन से क्या लाभ होता है ?

उत्तर : सत्य का पालन करने वाला जिन–जिन उत्तम कार्यों को करना चाहता है, वे सब सफल होते हैं।

प्रश्न 404 : क्या जिस बात को समाज का बहुमत प्राप्त हो उसे सत्य माननी चाहिए ?

उत्तर : सत्य का आधार प्रमाण, बुद्धिमत्ता, वेद व जिसमें सबकी उन्नति हो व सुख बढ़े। समाज में झूठ बोलने वालों का बहुमत है, मांस खाने वालों का बहुमत है फिर भी झूठ बोलना, मांस खाना सत्य नहीं माना जाएगा क्योंकि यह वेद विरूद्ध है।

प्रश्न 405 : क्या किसी के प्राण बचाने जैसे कार्य के लिए झूठ बोलना उचित है ?

उत्तर : किसी के प्राण बचाने जैसे कार्य के लिए झूठ बोलना अनुचित है। हमेशा सत्य के आश्रय से ही किसी का प्राण बचाना चाहिए।

प्रश्न 406 : अस्तेय किसे कहते हैं ?

उत्तर : मन, वाणी, शरीर से चोरी न करना तथा उत्तम कार्यों में तन, मन, धन से सहायता करना अस्तेय कहलाता है।

प्रश्न 407 : अस्तेय के पालन से क्या लाभ होता है ?

उत्तर : मन, वाणी तथा शरीर से चोरी छोड़ देने वाला व्यक्ति अन्य व्यक्तियों का विश्वासपात्र और श्रद्धेय बन जाता है। ऐसे व्यक्ति को आध्यात्मिक एवं भौतिक उत्तम गुणों व उत्तम पदार्थों की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 408 :ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं ?

उत्तर : मन तथा इन्द्रियों पर संयम करके वीर्य आदि शारीरिक शक्तियों की रक्षा करना, वेदादि सत्य शास्त्रों को पढ़ना तथा ईश्वर की उपासना, करना 'ब्रह्मचर्य' कहलाता है।

प्रश्न 409 : ब्रह्मचर्य के पालन से क्या लाभ होता है ?

उत्तर : ब्रह्मचर्य के पालन से शारीरिक तथा बौद्धिक बल की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 410 : अपरिग्रह किसे कहते हैं ?

उत्तर : हानिकारक व अनावश्यक वस्तुओं तथा हानिकारक तथा अनावश्यक विचारों का संग्रह न करना अपरिग्रह कहलाता है।

प्रश्न 411 : अपरिग्रह के पालन से क्या लाभ होता है ?

उत्तर : इसका पालन करने वाले व्यक्ति में आत्मा के स्वरूप को जानने की इच्छा उत्पन्न होती है अर्थात् मैं कौन हूं, कहॉ से आया हूं, कहॉ जाउंगा, मुझे क्या करना चाहिए, मेरा क्या सामर्थ्य है इत्यादि प्रश्न उनके मन में उत्पन्न होते हैं।

क्रमशः.......................

प्रेरक प्रसंग –

गुनाहों का देवता

घटना आज से करीब सौ साल पहले की है। एक दिन डायनामाईट के अविष्कारक एल्फ्रैड नित्य की भांति जल्दी उठे और अखबार पढ़ने में मग्न हो गए। थोड़ी देर अखबार पढ़ते हुए उनकी नजर उठावनी कॉलम (मृत्यु सूचना) पर पड़ी तो वे एकाएक चौंक पड़े। क्योंकि उस कॉलम में किसी और का नहीं बल्कि उन्हीं का नाम छपा था।

उस कॉलम की हेडिंग में लिखा था कि – 'डायनामाईट के अविष्कारक एल्फ्रैड की मौत हो गयी' इस हेडिंग को पढ़कर एल्फ्रैड और भी ज्यादा हैरान हो गये। उन्होंने झल्लाकर उस अखबार के आफिस का नम्बर डायल करना चाहा, किन्तु दूसरे ही क्षण उनके मस्तिष्क में एक विचार आया कि देखा जाए आम लोगों ने तथा प्रेस वालों ने उनके बारे में क्या–क्या बातें लिखी हैं।

जिज्ञासावश उन्होंने उस अखबार को उठाया और उस उठावनी कालम को पढ़ने लगे। उस कालम के अन्दर उन्होंने जो लिखा पाया, वो चौंका देने वाला था। क्योंकि उसके शोक सन्देश में लिखा था – 'वह डायनामाईट का बेताज बादशाह, इंसानियत का दुश्मन था। वह गुनाहों का देवता एवं मौत का सौदागर था। अच्छा हुआ कि वह जल्दी मर गया।'

इस कॉलम को पढ़कर वह अत्यन्त दुःखी हुआ। उसने खुद से सवाल किया– 'क्या लोग उसे इसी तरह से याद करेगें ? क्या उसके जीवन की उपलब्धियां एवं उसके द्वारा किए गये अविष्कार उसी तक सीमित रह जायेगें ? वह भी नकारात्मक रूप में ?

उसी क्षण एल्फ्रैड ने अपने जीवन का रूख बदलने का निर्णय लिया। मानव के लिए डायनामाईट के क्या–क्या सदुपयोग हो सकते हैं इस बारे में जानकारी हासिल कर लोगों को दी। फिर सारी जिन्दगी अपने व्यवहार एवं अपनी काबिलियत को उँचा दर्जा देने के लिए मानवता की सेवा करते रहे।

आज एल्फ्रैड को मृत्यु के देवता की बजाय लोग उसे शान्ति के देवदूत व नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले सम्मानित व्यक्ति के रूप में याद करते हैं।

एल्फ्रैड की तरह हमें भी अपने जीवन में कभी भी कहीं गलती हो जाए, तो सुधार कर लेना चाहिए। क्योंकि समाज में व्यक्ति अपने अच्छे कर्मों के लिए सदा याद किये जाते हैं। जबकि घटिया जीवन मूल्यों वाले व्यक्ति की कोई पहचान नहीं होती।

अब तय आपको करना है कि, आप समाज में किस तरह से याद किया जाना पसन्द करेगें ?

महात्मा हंसराज

हंसराज का जन्म 19 अप्रेल 1864 को पंजाब के होशियारपुर जिले के बजवाड़ा नामक ग्राम में एक सद्गृहस्थ लाला चुन्नीलाल के यहां हुआ।

1977 का ही वर्ष था, जब आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने पंजाब प्रान्त का व्यापक भ्रमण किया और अपने व्याख्यानों से इस प्रदेश को आन्दोलित कर दिया। स्वामी दयानन्द के विचारों से हंसराज भी परिचित हो गए।

मिशन स्कूल में पढ़ते हुए, उसके ईसाई मुख्याध्यापक से वे उस समय टकरा गए जब उस व्यक्ति ने, वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता पर निराधार आक्षेप की बात का प्रतिवाद करने के लिए उठ खड़ा हो, और अत्यन्त विश्वास के साथ आर्यों के एकेश्वरवादी होने की घोषणा करे – यह आश्चर्य ही तो था ! किन्तु मुख्याध्यापक ने इसे भी लड़के की गुस्ताखी समझा। उसने इस आर्य विद्यार्थी को पाठशाला से निकाल दिया। शीघ्र ही उसने अनुभव किया कि इसमें हंसराज की तो कोई गलती नहीं थी। अतः हंसराज को पुनः उसी स्कूल में प्रवेश मिल गया।

1885 में हंसराज ने बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। संस्कृत और इतिहास में उन्हें विशेष योग्यता प्राप्त हुई। हंसराज के सहपाठियों में कई ऐसे थे, जिन्होंने आगे चलकर पंजाब तथा भारत के इतिहास में अपना नाम अमर किया। उनमें लाला लाजपतराय, पं: गुरूदत्त, प्रो. रूचिराम साहनी, राजा नरेन्द्रनाथ आदि उल्लेखनीय है। ये सब हंसराज के सहपाठी थे। लाला हंसराज आर्य समाज लाहौर के सभासद बन गए। इस समाज द्वारा संचालित अंग्रेजी पत्र रोजेनेटर ऑफ आर्यावर्त के अवैतनिक सहायक सम्पादक भी रहे। पं. गुरूदत्त ने पत्र के प्रमुख सम्पादक का दायित्व ग्रहण किया था। लाला हंसराज उन दिनों स्वामी दयानन्द की वेद–विषयक मान्यताओं से परिचित होने के लिए, उनके द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथों का अध्ययन कर रहे थे।

30 अक्टूबर 1883, को अजमेर में ऋषि का निधन हो गया। यह शोक संवाद जब लाहौर पहुंचा तो दिवंगत ऋषि को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए 8 नवम्बर 1883 को लाहौर में एक सभा आयोजित की गई। सभा के अन्त में स्वामी दयानन्द की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए, एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना का निश्चय हुआ, जिसमें हिन्दी और संस्कृत के उच्चतर अध्ययन के साथ–साथ वेदादि सत्य शास्त्रों के अभ्यास तथा पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान, एवं अंग्रेजी भाषा के भी शिक्षण की व्यवस्था हो। इस कॉलेज को दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज – डी.ए. वी. कॉलेज का नाम दिया गया। प्रारंभ में तो कॉलेज के स्थान पर एक स्कूल खोलने का ही विचार था।

लाला हंसराज बी. ए. तो कर ही चुके थे। यदि वे चाहते तो उस समय पंजाब सरकार में कोई ऊंचा पद प्राप्त कर लेना उनके लिए कठिन नहीं था। किन्तु ऋषि दयानन्द के चरण–चिन्हों पर चलने की प्रबल लालसा ने, उन्हें स्वजीवन को डी. ए. वी. के लिए समर्पित करने को विवश कर दिया। अब उन्होंने बिना कोई वेतन लिये डी.ए.वी. स्कूल का मुख्याध्यापक बनने की इच्छा जाहिर की। प्रबंध समिति ने उनके इस जीवनदान के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

1 जून 1886 को जो डी. ए. वी. स्कूल एक छोटे से पौधे के रूप में स्थापित किया गया, कालान्तर में उसने महात्मा हंसराज जैसे सर्वस्व–त्यागी, जीवन बलिदानी महापुरूष के नेतृत्व एवं संरक्षण में पंजाब के ही नहीं, किन्तु समस्त देश के एक गौरवशाली, राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान का रूप ले लिया, जिसकी सफलता एवं गौरवशाली परम्परा भारतीय शिक्षा के इतिहास में ज्योतिस्तंभ सिद्ध हुई। हंसराज ने 1911 तक डी. ए. वी. कॉलेज के प्रिंसीपल का कार्य किया।

महात्मा जी के लोकसेवा के कार्य भी याद रखने योग्य हैं। 1895 में बीकानेर में भयंकर अकाल पड़ा। चार वर्ष पश्चात 1899 में समूचा राजस्थान ही दुर्भिक्ष की विभीषिका का शिकार हो गया। 1905 में कांगड़ा (हिमाचल) प्रलयंकारी भूकम्प से तबाह हो गया। 1908 में अवध की पवित्र भूमि अकालग्रस्त हुई। विपत्ति की इन सभी घड़ियों में महात्मा हंसराज ने आर्य प्रादेशिक सभा के माध्यम से जन सेवा का शंखनाद किया। इसी प्रकार महामारी आदि अन्य दैवी विपत्तियों से त्रस्त मानव जाति की सेवा, महात्माजी के जीवन का लक्ष्य बन गई थी।

1920–21 में महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन के दौरान, हिन्दू मुस्लिम एकता के सन्देश की अव्हेलना की गई। मलाबार (केरल) प्रान्त के मोपला, मुसलमानों ने साम्प्रदायिक हिंसा का ताण्डव किया। तब महात्माजी के लिए चुप बैठना संभव नहीं था। उन्होंने प्रादेशिक सभा के कार्यकर्ताओं को तुरन्त सुदूरवर्ती मलाबार प्रान्त में भेजा। मोपला मुसलमानों से त्रस्त और पीड़ित हिन्दुओं की रक्षा के उपाय करवाए। मलाबार और आर्य समाज शीर्षक पुस्तक में इसका पूर्ण विवरण दिया गया है।

आर्य समाज के सामाजिक सेवाकार्यो को महात्मा हंसराज ने सदा वरीयता दी। वे समय–समय पर पंजाब तथा देश के अन्य भागों में धर्म प्रचारार्थ जाते, उपदेश तथा व्याख्यान देते, एवं अपनी सत्सम्मति से आर्यों का मार्गदर्शन करते।

1927 में जब दिल्ली में प्रथम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया, तब महात्माजी को उसका अध्यक्ष बनाया गया। इस अवसर पर उन्होंने जो अध्यक्षीय भाषण दिया, उसमें आर्य समाज के सम्मुख उपस्थित प्रश्नों और समस्याओं की व्यापक समीक्षा की गई। अछूतोद्धार, शुद्धि और संगठन जैसे हिन्दू जाति के हित के प्रश्नों पर उनकी विचारधारा अत्यन्त स्पष्ट तथा व्यवहारिक थी। उन्होंने उत्तर भारत में स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में चलाए गए शुद्धि के आन्दोलन में पूर्ण सहयोग दिया तथा शुद्धि के कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया।

वस्तुतः महात्माजी श्वेत वस्त्रों में ही सन्यासी थे। जब 1933 में, अजमेर में आयोजित ऋषि दयानन्द के निर्वाण की अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर कुछ सन्यासियों ने स्वामी सर्वदानन्द जी से निवेदन किया कि वे उनके साथ चलकर महात्माजी को चतुर्थाश्रम की दीक्षा लेने के लिए प्रेरित करें, तब वीतराग सन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि 'निर्द्वन्द्व तथा सभी प्रकार की सांसारिक ऐषणाओं से मुक्त महात्माजी किसी भी कमण्डलधारी सन्यासी से कम नहीं हैं और मात्र कपड़े रंगकर सन्यास का बाना पहनने की उन्हें कोई आवश्यकता ही नहीं है।' ऐसे पुण्यश्लोक महात्मा हंसराज चौहत्तर वर्ष की आयु भोगकर 15 नवम्बर 1938 को परमात्मा की गोद में चले गए।

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी

लोकसेवा के महत्वपूर्ण कार्य करेन के लिए लम्बी आयु प्राप्त करना आवश्यक नहीं है। यदि पुरूषार्थी व्यक्ति जीवन के आरम्भ में ही अपने कार्य और पुरूषार्थ की रूपरेखा निश्चित कर ले, तो थोड़े समय में ही वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है। यह तथ्य आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान, वेदादि शास्त्रों के अप्रतिम प्रवक्ता, तथा धर्मप्रचार के लिए पराकाष्ठा की लगन रखने वाले पं. गुरूदत्त विद्यार्थी के जीवन से सिद्ध होता है। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी का जीवन छब्बीस वर्ष की अल्पावधि का ही था, तथापि इस अत्यन्त संक्षिप्त काल में उन्होंने अध्ययन, लेखन, संगठन तथा धर्मप्रचार का जो कार्य कर दिखाया, वह शतायु–भोगी लोगों के लिए भी ईर्ष्या उत्पन्न करने वाला है।

पं. गुरूदत्त का जन्म 26 अप्रेल 1864 को मुलतान के लाला रामकृष्ण के यहां हुआ। अध्ययन में इसकी रूचि बाल्यकाल से ही थी, अतः मुलतान से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर, उच्चतर अध्ययन के लिए वे लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज में प्रविष्ट हुए। यह जनवरी 1881 की घटना है। आर्य समाज मुलतान के सभासद् तो वे 1880 में ही बन गए थे।

स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात लाहौर के आर्य समाजियों ने, अपने आचार्य की स्मृति को चिरजीवित रखने के लिए 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज' के नाम से एक विद्यालय की स्थापना का निश्चय किया। इस शिक्षण संस्था के संस्थापकों में पं. गुरूदत्त का नाम भी महत्वपूर्ण है। डी. ए. वी. कॉलेज के लिए धन–संग्रहार्थ जो प्रतिनिधि मण्डल देश के अनेक नगरों में गए, उनमें पं. गुरूदत्त की भूमिका सार्थक तथा सराहनीय रही। इस कार्य के लिए वे दिल्ली, अलीगढ़, बरेली, मुरादाबाद, लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद, कानपुर, फरूखाबाद आदि अनेक नगरों में गए। वहां से पर्याप्त धन एकत्र किया। संयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश)

के अतिरिक्त उन्होंने पंजाब के अनेक नगरों में भी भ्रमण किया। कॉलेज के लिए धन–संग्रह करने के अतिरिक्त उन्होंने वैदिक विषयों पर प्रवचन भी किये। उनके प्रवचनों की सर्वत्र प्रशंसा होती थी।

पं. गुरूदत्त ने विज्ञान विषय लेकर एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। उन दिनों उच्च शिक्षित भारतीयों के लिए सरकारी सेवा में प्रवेश पा लेना कोई कठिन कार्य नहीं था। किन्तु पं. गुरूदत्त की ऐसे किसी काम में रूचि नहीं थी जो उनके सार्वजनिक जीवन तथा आर्यसमाज की सेवा में बाधक बने। एकबार तो उन्हें अतिरिक्त सहायक कमिश्नर के लिए होनेवाली परीक्षा में बैठने की सलाह भी दी गई, किन्तु गुरूदत्त की रूचि प्रशासनिक कार्यों की अपेक्षा, अध्ययन–अध्यापन में अधिक थी। 1887 में जब गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर के विज्ञान के प्रोफेसर ओमन अवकाश पर गए, तो पं. गुरूदत्त को अस्थायी रूप से उनके स्थान पर रख लिया गया। 1889 में वे डी. ए. वी. कॉलेज में अवैतनिक रूप में गणित तथा विज्ञान पढ़ाने लगे।

बौद्धिक क्षमता तथा कर्मठता में पं. गुरूदत्त बेमिसाल थे, किन्तु उनका निजी जीवन सार्वथा अनियमित था। उन्होंने स्वास्थ्य की ओर कभी ध्यान नहीं दिया, यद्यपि अपने विद्यार्थी काल में वे नियमित व्यायाम करते रहे थे। शरीर को कष्ट देने में वे सुख अनुभव करते, और गर्मी तथा सर्दी में, ऋतु–नियमों के प्रतिकूल आचरण करते। भोजन भी उनका अनियमित तथा नितान्त अल्प होता था। उनके सहपाठी तथा मित्र लाला लाजपतराय ने उनकी अनियमित जीवन शैली पर पर्याप्त विस्तार से लिखा है। निरन्तर भाषण, लेखन तथा सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण पं. गुरूदत्त का स्वास्थ्य खराब हो गया। वे राजयक्ष्मा के शिकार हो गए।

स्वास्थ्य–सुधार के लिए वे पर्वतीय स्थल मरी (पाकिस्तान) भी गए, किन्तु स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। अब उनके जीवन का संध्याकाल आ गया था। डॉ. नारायण दास और जालंधर के हकीम शेर अली की चिकित्सा ने कुछ दिनों तक उनके जीवनदीप को स्थिर रक्खा, किन्तु पं. गुरूदत्त के शरीर की दुर्बलता जिस सीमा तक पहुंच चुकी थी, उससे उबरना कठिन था। अन्ततः 19 मार्च 1890 को इस युवा मुनि का देहान्त हो गया।

लाला लाजपतराय ने अपने इस मित्र तथा सहयोगी को श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें असाधारण व्यक्तित्व का धनी, सच्चा, गम्भीर, संस्कृत का पारगामी विद्वान तथा ऋषियों की परम्परा का उत्तराधिकारी बताया। पं. गुरूदत्त ने ऋषि दयानन्द के अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश का अठारह बार अध्ययन किया। इसके प्रत्येक पारायण ने उन्हें नवीन जानकारियां प्रदान की थीं। आर्य पत्रिका (लाहौर), ट्रिब्यून' दि ट्रू लाइट (एक ईसाई पत्र), सिविल एण्ड मिलिटरी गजट (लाहौर) जैसे पत्रों ने इस युवा मनीषी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सर सैयद अहमद खॉ द्वारा स्थापित ऐंग्लो मुहम्मडन कॉलेज (वर्तमान में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी) के मुख पत्र अलीगढ़ इन्स्टीट्यूट गजट' ने भी अपने 25 मार्च 1890 के अंक में, पं. गुरूदत्त के निधन पर अपार दुःख व्यक्त किया।

भिखारी और नेता

एक भिखारी और नेता में, हो गया विवाद।
बढ़ गई बात पर से बात,
नेता ने कहा अरे ओ भिखारी।
चिल्ला–चिल्ला कर, क्यों जान ले रहा हमारी।

अच्छा भला है, काम कर सकता है,
भीख मांगने नाहक ही भटकता है।
रोज–रोज मांगने यहां चले आता है,
जैसे तेरे बाप का कर्ज हम पर आता है।

ऊपर से मुजोरी भी करता है,
पेट हमारे टुकड़ों से ही भरता है।
जरा देख तेरी क्या औकात है,
सड़कछाप तू करता है कैसी बात।

नेता की बात सुन
जमीन पर रखते हुए झोला।
भिखारी धीरे से बोला,

क्यों गुस्सा करता है, भाई
मेरी समझ में ये बात ना आई
तू इस धंधे से नाहक क्यूं डरता है।
धन्धे को व्यर्थ बदनाम करता है,

ठण्डे दिमाग से सोच, जरा कर विचार,
जितनी फिर चाहे करना चिल्ला–पुकार।।
देख नेता तेरा और मेरा एक ही है धंधा,
मेरा साफ सुथरा पर तेरा है गन्दा।
मैं रोटी और तू वोट मांगता है,
सारा शहर ये जानता है।।
इसलिए तुझे और मुझे,
एक ही मानता है।।

मैं रोज पेट के लिए भीख मांगता हूं,
हर मोहल्ले घर को जानता हूं।
कोई देता, कोई आगे बढ़ाता है,
मैं बढ़ जाता मेरा क्या जाता है।।

मैं बार–बार उसी मोहल्ले गली में जाता हूं,
रूखी–सूखी जो मिलती, खाके भूख मिटाता हूं।

पर तू अपनी ओर देख, फिर बोल,
जाने कितनी छिपा रखी हैं पोल।

मैं छोटा तू बड़े कद वाला है,
मौका मिलते ही, करता घोटाला है।
मेरी भीख से किसी को, विशेष फर्क नहीं आता।
पर तेरी से पूरा देश ही घबराता।।

मैं बेखटके बार–बार कहीं भी चले जाता,
पर तू तो फिर जाने से मुह छिपाता।

तू वोट के लिए जाने कितने झूठ बोलता है,
षड़यन्त्रों के पाप की गठरी सिर पर ढोता है।

मेरी हवस पेट की, रोटी से मिट जाती।
पर तेरी भूख निरन्तर बढ़ती जाती।।

मैं काम नहीं करता, कोई काला।
पर तू तो मौका मिलते ही, करता घोटाला।।

मैं सीमित साधनों से सन्तोष हूं करता,
तू तो दुनिया हजम करने से नहीं डरता।
इसलिए धन्धा दोनों का भले ही है एक,
पर तुझसे तो मेरा ही धन्धा है नेक।।

— प्रकाश आर्य, महू

ईश्वर

श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः

(जनासः) हे मनुष्यो। (अस्मै) इस परमेश्वर पर (श्रत् धत्त) श्रद्धा करो (स) वह (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् प्रभु है।

ईश्वर सर्वव्यापक है।

गुरू नानक मक्का गए। रात में मस्जिद के बाहर सो गए। उनके पैर मक्का के पवित्र पत्थर की ओर थे। एक मुल्ला ने गुस्से से कहा, "तुम्हें इतनी भी समझ नहीं है कि अल्लाह की तरफ पैर करके नहीं सोया जाता।"

नानक ने जवाब दिया, मेरे भाई मैं भी काफी मुश्किल में हूं कि अल्लाह की तरफ पैर नहीं करूं। मेरी सहायता करो और जिधर अल्लाह न हो उधर ही मेरे पैर कर दो।

संसार परमात्मा में स्थित है।

श्वेतकेतु की समझ में नहीं आ रहा था कि यह नान रूपों वाला जगत् मात्र एक ही तत्व "सत्" से किस प्रकार उत्पन्न हो सकता हैं, उसने अपने पिता ऋषि उद्दालक से जिज्ञासा की। ऋषि ने कहा, "वत्स, वटवृक्ष का एक फल ले आओ।

श्वेतकेतु फल ले आया।

उद्दालक ने कहा, "इसको तोड़ो और बताओ कि इसमें तुमने क्या देखा ?

"इसमें अनेक छोटे–छोटे बीज हैं।" उद्दालक ने बताया। श्वेतकेतु ने उनमें से कोई एक बीज तोड़ने को कहा और फिर पूछा –

"इसमें क्या देखते हो ?"

"कुछ नहीं।" श्वेतकेतु ने सहज भाव से उत्तर दिया।

ऋषि उद्दालक ने जिज्ञासु पुत्र को समझाते हुए कहा, "तू इस बीज में अन्तर्निहित सूक्ष्म पदार्थ को इन आँखों से नहीं देख पा रहे हो और न ही उसकी अनुभूति कर पा रहे हो। लेकिन अपनी समस्त शाखाओं–प्रशाखाओं सहित यह विशाल वटवृक्ष इसमें स्थित है। ठीक इसी तरह, यह सारा संसार उस मात्र एक तत्व "सत्" में समाहित है। श्वेतकेतु की जिज्ञासा शांत हो गई।

संसार में व्यापक होते हुए भी वह दिखाई नहीं देता।

एक सन्त से किसी ने पूछा, "ईश्वर है तो दिखाई क्यों नहीं देता ?" सन्त ने कहा, ईश्वर अनुभूति का विषय है। उसे देखने का कोई उपाय नहीं है। हॉ, उसे अनुभव अवश्य किया जा सकता है।" सन्त की ये बातें प्रश्नकर्ता को सन्तुष्ट नहीं कर सकीं। उसने कहा कि यह कैसी बात है ? समझ में नहीं आई। सन्त ने तभी अचानक पास में पड़ा एक पत्थर उठाया और अपने पांव पर दे मारा। उनके पैर में गहरी चोंट आई, यहां तक कि खून भी बहने लगा। प्रश्नकर्ता यह देखकर हैरान रह गया और बोला, यह क्या किया आपने ? इससे क्या आपको पीड़ा नहीं होगी?

सन्त ने हँसते हुए कहा, पीड़ा दिखती नहीं फिर भी है। ऐसे ही ईश्वर भी दिखता नहीं, परन्तु है। उसे देखने के लिए बाहर नहीं खोजा जा सकता है। वह खोजने वाले के भीतर ही बैठा होता है। खोजना नहीं।

ईश्वर ध्यान और समाधि द्वारा प्राप्त होता है।

एक तपस्वी था। उसे राजदरबार में बुलाया गया। राजा ने कहा, स्वामीजी आपको कष्ट इसलिए दिया कि हम ईश्वर पर आपका प्रवचन सुनना चाहते हैं ?"

तपस्वी पद्मासन लगाकर बैठ गया। ऑखें बन्द कर ली। राजा ने देखा कि स्वामी जी बोल नहीं रहे हैं। उसने आग्रह किया, "आप चुप क्यों हैं ? प्रवचन शुरू कीजिए।"

तपस्वी का मौन जारी रहा। राजा चिढ़ गया और बोला, "यह क्या बात है? आप बोलते क्यों नहीं ?"

स्वामीजी मुस्कुराये और कहने लगे, "मैं बोल तो रहा हूं। आप समझ ही कब रहे हैं ? ईश्वर शब्दातीत है, मौन है, शान्त है।"

शव की परीक्षा

हिमालय से उतरकर गंगा के किनारे–किनारे देश दर्शन करते हुए दयानन्द स्वामी गढ़मुक्तेश्वर पहुंचे। एक दिन गंगा तट पर संध्या कर रहे थे कि गंगा में एक बहता हुआ शव दिखाई पड़ा। उन दिनों दयानन्द हठयोग के ग्रंथों का अध्ययन कर रहे थे। नाड़ी चक्र के संबंध में इन ग्रंथों में जो कुछ पढ़ा था उसके सत्य–असत्य की परीक्षा का अच्छा योग था।

गंगा में उतर कर शव को किनारे पर लाये और तेज छुरी से उसकी चीर फाड़ करके ग्रंथों में जो पढ़ा था उससे मिलान करने लगे और देखा कि ग्रंथ का नाड़ी चक्र संबंधी एक भी विवरण सत्य नहीं था। फिर शव को उन्होंने गंगा में प्रवाहित कर दिया।

इस घटना ने उन्हें मनुष्य कृत ग्रंथों के प्रति अनास्था पैदा कर दी।

अत्रा जहीत ये असन् दुरेवाः। (अथर्व 12.2.26)

जो पापी हैं, उनका साथ छोड़ों।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के कारणों के विषय में क्या आप जानते हैं ?

1. सामान्य रूप से हवा में 21 प्रतिशत ऑक्सीजन, 78 प्रतिशत नाईट्रोजन, 0.03 प्रतिशत कार्बनडाय ऑक्साईड तथा लगभग 1 प्रतिशत अन्य जहरीली गैसों के मिलने के कारण इसकी संरचना में परिवर्तन होने से वायु प्रदूषण होता है।
2. 60 प्रतिशत वायु प्रदूषण मोटर वाहनों से और 35 प्रतिशत बड़े तथा मध्यम उद्योगों से फैलता है।
3. एक मोटर वाहन 970 कि.मी. की यात्रा में उतना ऑक्सीजन फूँक डालता है जितना एक व्यक्ति की एक वर्ष के लिए आवश्यकता होती है।
4. किसी भी स्वचलित वाहन में एक गैलन पेट्रोल/डीजल के दहन से तीन पाउंड नाइट्रोजन ऑक्साईड वायु निकलती है जो कि 5 से 20 लाख घनफीट हवा को प्रदूषित कर देती है।
5. प्राकृतिक सन्तुलन के लिए पृथ्वी पर भूमि के 33 प्रतिशत भाग पर वन होना अति आवश्यक है। हमारे देश में वर्तमान में मात्र 19 प्रतिशत भूमि पर वन है।
6. दिल्ली एवं दिल्ली जैसे अन्य महानगरों में लोग जाने–अनजाने प्रतिदिन 20 सिगरेटों के धुएँ में जितना विष होता है उतना विष प्रदूषित वायु के कारण अपने फेफड़ों में खींच लेते हैं।
7. मनुष्य एक दिन में औसतन 21,600 बार श्वसन क्रिया करता है और इस क्रिया में 16 कि.ग्रा. ऑक्सीजन आवश्यक होता है।
8. एक व्यक्ति एक वर्ष में 12 टन कार्बनडाय ऑक्साईड उच्छ्वास से वातावरण में बाहर फेंकता है।
9. एक बड़ा पूर्ण विकसित वृक्ष एक मनुष्य के सम्पूर्ण आयु के लिए जितनी आवश्यक होती है उतनी मात्रा में ऑक्सीजन प्रदान करता है और वह हवा, पानी, ध्वनि के प्रदूषण तथा धूल को रोकता है।
10. वायु प्रदूषित होने के कारण खाद्य पदार्थ पोषक तत्वों से रहित, अशुद्ध और शक्तिहीन बन गए हैं।
11. प्रदूषण के कारण पौधों की कार्बनडाय ऑक्साईड शोषण करने की तथा पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ने की प्राकृतिक प्रक्रिया मन्द हो रही है।
12. पिछले कई वर्षों से फल, सब्जी, खाद्यान्न आदि का परीक्षण करने पर पता चला है कि इन सबमें जहरीले कीटनाशक रसायनों के अंश विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू. एच. ओ.) द्वारा निर्धारित मात्रा से कई गुना अधिक पाया जाता है।

13. पृथ्वी पर होने वाली कुछ रासायनिक क्रियाओं से पर्यावरण में फैलने वाले प्रदूषण के कारण आकाश स्थित ओजोन वायु की परत में एक बड़ा छिद्र हुआ है यदि इसी गति से छिद्र होते रहेगें तो पैराबैंगनी किरणों को रोकना संभव नहीं रहेगा और इसका परिणाम यह होगा कि लोग केंसर, ऑखों की ग्रंथी आदि भयंकर रोगों से ग्रस्त होगें तथा वृक्ष, वनस्पति भी प्रभावित होंगें।

14. बढ़ते जा रहे वायु प्रदूषण पर यदि नियन्त्रण नहीं किया गया तो कुछ वर्षों बाद ऐसी स्थिति बन जाएगी कि मनुष्यों को अपने साथ प्राणवायु का सिलेण्डर बांधकर रखना होगा जिसमें शुद्ध वायु ली जा सके। जैसे आज अशुद्ध जल के कारण खनिज जल की बोतल का तथा नाक को ढ़कने के लिए कपड़े की पट्टी का प्रचलन हो गया है।

15. प्रदूषण से उत्पन्न महाविनाश के विरूद्ध यदि सामूहिक रूप से कोई उपाय नहीं किया जाएगा तो इस युग में मानव जीवित नहीं रह पाएगा।

जिस प्रकार पेट्रोल आदि जलकर वायु प्रदूषित करते हैं उसी प्रकार सुगन्धित सामग्री और घी आदि के जलने से वायु शुद्ध होती है। अतः अपने घर में रोजाना यज्ञ–हवन करें – आर्य समाज का आपसे विनम्र निवेदन है।

पर्यावरण शुद्धि के लिए आर्य समाज कृतसंकल्प है। यज्ञ ही पर्यावरण शुद्धि का एकमात्र उपाय है। यह पत्रक आर्य समाज की ओर के पर्यावरण शुद्धि हेतु जनहित में जारी किया गया है।

यज्ञ कुण्ड – यज्ञ पात्र हवन सामग्री, यज्ञ–हवन पर विशेष साहित्य आदि प्राप्त करने के लिए किसी भी आर्य समाज से सम्पर्क करें।

समाज सुन्दर मकान बनाकर सुख–शान्ति की कामना करता है। यह उसका भ्रम है। सुख–शान्ति मकान नहीं, घर निर्माण से होती है।

सुन्दर मकान तो रेत, ईंट, सीमेन्ट, सरिया भौतिक वस्तु से बन जाता है परन्तु सुन्दर घर अच्छे परिवार से बनता है। इसलिए शिक्षा, संस्कार, संगठन, सत्संग की आवश्यकता होती है।

उपाय..........समस्या.............आशा.............

0 रूस के वैज्ञानिक श्री शिरोविच ने एक पुस्तक में लिखा है कि गाय के घी को अग्नि में डालने से उससे उत्पन्न धुआं परमाणु विकिरण के प्रभाव को बड़ी मात्रा में दूर कर देता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह प्रक्रिया 'यज्ञ' के नाम से जानी जाती है।

0 वैज्ञानिक परीक्षण में यह तथ्य सामने आया है कि यज्ञ–धूम्र से निकलने वाले अधु रडिएशन में मौजूद अल्फा, बीटा और गामा पार्टिकल से काफी बड़े होते हैं। रेडिएशन पर्टिकल (अणु) आगे बढ़ने के लिए यज्ञ–धूम्र के बड़े पर्टिकल से टकरा कर अपनी ऊर्जा खो देते हैं। इस तरह विकिरण का प्रभाव बहुत कम हो जाता है। जापान में हुए रेडिएशन के प्रभाव को यज्ञ के माध्यम से कम किया जा सकता है। (राज. पत्रिका 23 मार्च 11 जयपुर)

0 पूना में फर्ग्युसन कॉलेज के जीवाणु शास्त्रियों ने एक प्रयोग किया उन्होंने 36X22X10 घनफुट के एक हॉल में एक समय का अग्निहोत्र किया परिणाम स्वरूप 8000 घनफुट वायु में कृत्रिम रूप से निर्मित प्रदूषण का 77.5 प्रतिशत हिस्सा खत्म हो गया, इतना ही नहीं इस प्रयोग से उन्होंने पाया कि एक समय के अग्निहोत्र से ही 96 प्रतिशत हानिकारक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं यह सब यज्ञ की पुष्टीकारक गैसों से ही सम्भव हुआ है। (अग्निहोत्र)

0 जलती शकर में वायु शुद्ध करने की बहुत बड़ी शक्ति विद्यमान है। इससे चेचक, हैजा, क्षय आदि बीमारियॉं तुरन्त नष्ट हो जाती हैं। मुनक्का, किशमिश आदि फलों को (जिनमें शकर अधिक होती है) जलाकर देखा तो पता चला कि इनके धुंए से आन्त्रिक ज्वर के कीटाणु 30 मिनट में और दूसरे रोगों के कीटाणु एक या दो घण्टे में नष्ट होते हैं।

(वैज्ञानिक ट्रिलवर्ट वैदिक यज्ञ विज्ञान)

0 विभिन्न रोगों के जन्तुओं को समाप्त करने के लिए यज्ञ से सरल तथा सुलभ पद्धति अन्य कोई नहीं है।

एम. मॉनियर, चिकित्सा शास्त्री (एन्शिएण्ट हिस्ट्री ऑफ मेडिसिन)

0 शकर के दहन से उत्पन्न धुएं में पर्यावरण परिशोधन की विचित्र शक्ति है। इससे क्षयरोग, चेचक, हैजा आदि बीमारियों के विषाणु नष्ट हो जाते हैं।

वैज्ञानिक ट्रिलवर्ट (फ्रांस)

0 केसर तथा चावल को मिलाकर हवन करने से प्लेग के कीटाणु भी समाप्त हो जाते हैं। डॉ. कर्नल किंग

0 अमेरिका, चिली, पॉलैण्ड, जर्मनी आदि देशों में अग्निहोत्र (हवन) की लोकप्रियता बढ़ रही है।

0 विश्व के अनेक देशों में रोगों को दूर करने के लिए, प्रदूषण को दूर करने के लिए, तथा कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए यज्ञ चिकित्सा का प्रचलन बढ़ रहा है।

0 गाय के घी के साथ हवन की सामग्री यज्ञ कुण्ड में जलाकर विशेष शक्तिशाली बनकर दूषित वायुमण्डल के 99 प्रकार के दुर्गुणों को सरलता से नष्ट कर देती है।

0 1857 की क्रांति के जनक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बलि प्रथा बन्द करा यज्ञों का पुनः उद्धार किया तथा यज्ञ से सम्बन्धित सभी भ्रान्तियों का वेदों के अनुसार निवारण कर इसके अनेक वैज्ञानिक व औषधीय लाभों से सम्पूर्ण विश्व को अवगत कराया। ऋषि दयानन्द कहते हैं कि – जो व्यक्ति यज्ञ से शुद्ध किए हुए अन्न, जल और पवन आदि पदार्थों का सेवन करते हैं वे निरोग होकर बुद्धि, बल, आरोग्य और दीर्घायु वाले होते हैं।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। साथ ही अपनी वार्षिक सहयोग राशि भी प्रेषित करें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवं।

आज का व्यक्ति सुधार की दृष्टि से अपने पर कम दूसरों पर अधिक ध्यान देता है।

शरीर को निरोग रखने के नियम

शरीर को निरोग एवं स्वस्थ रखने के लिए नीचे लिखे नियमों का पालन कीजिये :–

1. प्रातःकाल शीघ्र 5 बजे तक उठ जाने की आदत डालो। रात को दस बजे के भीतर ही सो जाओ।

2. सवेरे उठकर 5–10 मिनिट परमपिता परमात्मा से प्रेम वा श्रद्धा से प्रार्थना करो और अपने मन में पवित्र विचारों की धारा प्रवाहित करो। यह सोचो कि मेरे शरीर में कोई रोग नहीं। मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ।

3. फिर थोड़ा पानी पीकर टहलकर शौच जाओ। मुख वा सिर को वस्त्र से ढंककर पूर्व दिशा की ओर शौच करना चाहिए, जिससे दुर्गन्ध को वायु उड़ा ले जाए।

4. शौच के बाद मिट्‌टी से हाथ धोकर दातुन करो। दॉत अच्छी तरह साफ करने चाहिएँ।

5. फिर ऋतु के अनुसार मालिश करके स्नान करो। स्नान करते समय सबसे पहले ठण्डा जल सिर पर डालो। गर्म जल से नहाते समय सिर पर गर्म पानी अधिक मत गिराओ, क्योंकि इससे नजर कमजोर हो जाती है।

6. स्नान रोज करो। इससे शरीर में चुस्ती आती है।

7. प्रातः खुली हवा में व्यायाम करो। इससे श्वास रोग नहीं होने पाता। रक्त साफ होता है और मन वश में होता है।

8. मस्तिष्क ठण्डा और पैर सदा गर्म रखने चाहिए।

9. स्नान करके अपनी शक्ति के अनुसार व्यायाम करो। व्यायाम खुली तथा साफ–सुथरी जगह में करना चाहिए।

10. प्रतिदिन प्रातःकाल थोड़ी सैर अवश्य करो क्योंकि उस समय वायु मंडल में ओषजन अधिक होने से रोग दूर होते हैं और सेहत बढ़ती है। सवेरे की सैर सचमुच अमृत है।

11. फिर कुछ पढ़कर भोजन करो। भोजन का प्रत्येक ग्रास चबा–चबाकर खाओ, जिससे वह भली प्रकार पच जाए।

12. भोजन के बाद गीले हाथ ऑखों पर फेरने से नजर तेज होती है।

13. छींक, जॅभाई, शौच व मूत्र कभी नहीं रोकना चाहिए। ऐसा करना स्वास्थ के लिए बड़ा हानिकारक है।

14. शरीर व मस्तिष्क के परिश्रम के बाद गर्म दूध का सेवन करो। बहुत भला होगा।

चिन्ता किसकी और क्यों ?

हम चिन्ता करते हैं उसके लिए जो कभी नष्ट नहीं होता। किन्तु फिर भी चिन्ता इसलिए होती है कि जो नाशवान है, जिसका रूप परिवर्तित होना आवश्यमेव है, जो सदा नहीं रहता, उसके न रहने पर हम अपना अस्तित्व ही समाप्त हुआ मान लेते हैं। यह भ्रम अज्ञानतावश आज मानव समाज में सर्वत्र व्याप्त है।

मानव जीवन के अस्तित्व का आधार जीवात्मा है, इसी के लिए मैं, तुम, वह का संबोधन किया जाता है, वह अजर, अमर, शाश्वत है। हॉ, शरीर सदा रहने वाला नहीं है हम उसकी क्षति को ही अपनी (जीवात्मा) की क्षति मान कर दुःखी होते है। योगीराज श्रीकृष्ण ने इस संबंध में गीता में उपदेश दिया –

न जायते म्रियते वा कदाचिन्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।20।।

यह आत्मा न कभी उत्पन्न होता है, न कभी मरता है। ऐसा भी नहीं है कि एक बार जब यह अस्तित्व में आ गया तब फिर दोबारा होने का नही। यह अजन्मा है, नित्य है, शाश्वत है, पुरातन है। शरीर के वध हो जाने पर भी यह मरता नहीं है।

आर्य समाज की गतिविधियां

गौशाला हेतु सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य द्वारा सात्विक दान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीमान सुरेशचन्द्र जी आर्य द्वारा दो लाख रूपए का सात्विक दान आर्य समाज, महू के माध्यम से प्रदान किया गया। आर्य समाज टिगरिया स्थित गौशाला हेतु प्रधान जी से सहयोग का निवदेन किया गया था। साथ ही कुछ राशि निर्माणाधीन कन्या गुरूकुल मोहन बड़ोदिया हेतु भी चाही थी, सभा प्रधान आर्य समाज के उदार मना दानी हैं, अनेक रचनात्मक कार्यों में करोड़ों का दान दे चुके हैं और दे रहे हैं। अतः तत्काल 2 लाख रूपए का सात्विक दान प्रदान किया है। इसी उदारता की भावना से आपने सिंहस्थ में भी 2 लाख 11 हजार की राशि भेंट की थी।

सभा प्रधान श्री इन्द्रप्रकाशजी गांधी, उज्जैन संभाग उपप्रधान श्री लक्ष्मीनारायण आर्य, उपमन्त्री श्री दरबारसिंह आर्य ने दान दिए जाने हेतु सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य का आभार व्यक्त कर धन्यवाद दिया।

चिकित्सा केन्द्र का उद्घाटन

इन्दौर। 26/6/16 रविवार को आर्य समाज मन्दिर मल्हारगंज में चिकित्सा केन्द्र का उद्घाटन किया गया। आज मानव इस आधुनिक युग में अनेकों सुख संसाधनों से सम्पन्न होने के बावजूद भी अनेकों असाध्य रोगों से ग्रसित होता जा रहा है। जैसे मोटापा, ब्लडप्रेशर, शुगर, केंसर, टी. बी. आदि। इन समस्त रोगों के उपचार व चेकअप के लिए मनुष्य दर–दर भटकता है, रूपये की कमी के कारण उसकी मृत्यु तक हो जाती है। अतः इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए आर्य समाज मल्हारगंज तथा नेशनल सेन्ट्रल लैब के संयुक्त तत्वावधान में चिकित्सा केन्द्र का उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर सेन्ट्रल लैब की मुख्य संचालिका श्रीमती विनीता कोठारी तथा आर्य समाज मल्हारगंज के प्रधान डॉ. दक्षदेव गौड़, मन्त्री डॉ. विनोद अहलुवालिया के सानिध्य में मुख्य संचालिका ने दीप प्रल्वलित कर उद्घाटन किया। सेवा का एक नया प्रकल्प शुरू किया। जहां आधे मूल्य 20 से 70 प्रतिशत छूट पर चिकित्सा की जाएगी।

वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

इन्दौर। आर्य समाज मन्दिर मल्हारगंज, इन्दौर की कार्यकारिणी का चुनाव प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी रविवार को अत्यन्त सौहार्दपूर्ण तरीके से सम्पन्न हुआ।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के द्वारा निर्धारित चुनाव अधिकारी श्री रमेशचन्द्रजी गोयल पर्यवेक्षक के सानिध्य में आयोजित आर्य समाज की साधारण सभा के पश्चात सर्वसम्मति से डॉ. दक्षदेव गौड़ 'प्रधान', डॉ. विनोद अहलुवालिया 'मन्त्री', तथा सुश्री सुशीला शर्मा 'कोषाध्यक्ष' के रूप में निर्विरोध चुने गए। चुनाव उपरान्त सभी नव निर्वाचित सदस्यों ने जन साधारण का आभार व्यक्त किया तथा नए जोश एवं शक्ति के साथ कार्य सम्पादन करने का संकल्प लिया।

जल ही जीवन है, इसे व्यर्थ न बहाएं।

आर्ष ग्रंथों का पत्राचार से स्वाध्याय पाठ्यक्रम

आर्य समाज की मान्यता का आधार वेदादि शास्त्र हैं, आर्य समाज के सिद्धान्त पूर्णतः इन्हीं आर्ष ग्रंथों पर आधारित हैं। यह भी पूर्ण सत्य एवं सर्वमान्य है कि वेद और वैदिक साहित्य समाज में उपलब्ध समस्त विचारधाराओं से श्रेष्ठ व सत्य पर आधारित हैं।

महर्षि दयानन्द रचित ग्रंथों के पठन–पाठन में लेशमात्र भी वैदिक विचारधारा से हटकर कुछ नहीं है। जब तक इन ग्रंथों का आर्यजन स्वाध्याय करते रहे तब तक आर्य समाज की मान्यताओं में स्थायित्व व एक दृढ़ता थी, व्यक्ति समर्पित व पक्के मिशनरी थे। स्वाध्याय की कमी से व्यक्ति व परिवार आर्य विचारधारा के साथ वैसे नहीं जुड़ रहे हैं। शिथिलता अथवा बिखराव की स्थिति बनते जा रही है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती है कम से कम उनके रचित ग्रंथों की जानकारी और उनका पठन पाठन भी हमारी विचारधारा को तरोताजा बनाए रखता है। महर्षि के अनमोल तर्क संगत विचार पढ़कर दृढ़ता आती है। यह क्रम आर्यों में निरन्तर चलते रहना चाहिए।

इसी भावना से महर्षि की अनमोल रचना ऋग्वेद भाष्य भूमिका का प्रारंभ स्वाध्याय घर–घर में हो सके, इस हेतु डॉ. सोमदेवजी शास्त्री, मुम्बई ने इस पुस्तक का क्रमबद्ध स्वाध्याय करने की दृष्टि से एक अत्यन्त प्रसंशनीय कार्य प्रारंभ किया, जिसमें प्रतिमाह ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के संबंध में अलग–अलग 10 भागों में जानकारी प्रेषित की जावेगी।

नियम

1. पाठ्यक्रम का सत्र अगस्त से मई तक होगा। जून, जुलाई में परिणाम और पुरस्कारों की घोषणा तथा अगले पाठ्यक्रम की सूचना।

2. प्रत्येक अंक के अन्त में पांच प्रश्न होगें जिनका उत्तर अलग कागज पर लिखकर नाम व पता लिखकर प्रतिमास भेजना होगा।

3. 80 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के तीन विजेताओं को प्रथम पुरस्कार लक्की ड्रा के आधार पर प्रत्येक को 1100/– का पारितोषिक। 70 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के तीन विजेताओं को प्रत्येक को 501/– का पारितोषिक। 50 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के तीन विजेताओं को प्रत्येक को 251/– का पारितोषिक दिये जायेगें। 40 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विजेताओं को प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

4. मुद्रण एवं डाक व्यय आदि हेतु पाठ्यक्रम का **वार्षिक शुल्क रू. 150/–** है।

यह जानकारी छोटी सी पुस्तिका के रूप में होगी। इसके पीछे प्रश्न उल्लेखित होगें, जिनका उत्तर इसी पुस्तक में से प्राप्त हो जायेगा। स्वाध्याय का सरल रोचक और आकर्षक प्रकार इससे अच्छा नहीं हो सकता है।

इसलिए प्रयास यह होना चाहिए कि घर–घर में प्रत्येक सनातनधर्मी तक प्रत्येक आर्य परिवार में कम से कम यह पहुंचे। **कृपया शीघ्र ही अपनी स्वीकृति संलग्न प्रारूप अनुसार धनराशि सहित प्रेषित करें।**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक 20, 21, 22 अक्टूबर 2016

काठमाण्डू नेपाल में

जिसमें भारत सहित अन्य देशों के प्रतिनिधि सम्मिलित होगें।

यात्रा संबंधी जानकारी हेतु सम्पर्क करें –

अरूण वर्मा
दिल्ली
मो. 9810086759

एस.पी.सिंह
दिल्ली
मो. 9540040324

सुरेशचन्द आर्य
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
मोबा. 09824072509

आवश्यक सूचना

सिंहस्थ 2016 हेतु धन एकत्रित करने हेतु जिन महानुभावों के पास **''वैदिक धर्म प्रचार शिविर''** की रसीद बुकें हैं, वे कृपया आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज मार्ग, उज्जैन (म. प्र.) में यथाशीघ्र जमा करने की कृपा करें, उसके अभाव में हिसाब पूर्ण नहीं हो पा रहा है।

चूंकि शीघ्र ही इसका ऑडिट करवाना आवश्यक है। अतः जिन महानुभावों के पास रसीद कट्टे हैं, वे कृपया शीघ्रातिशीघ्र जमा करावें।

आर्य लक्ष्मीनारायण पाटीदार
संयोजक
मोबा. 09827078880

विशेष सूचना – आर्य समाज के समस्त प्रधान एवं मन्त्री महानुभावों से निवेदन है कि जिन आर्य समाजों के प्रतिनिधि चित्र व सभा को देय वार्षिक राशि अभी तक अप्राप्त है वे यथाशीघ्र प्रेषित करने की कृपा करें। इसी आधार पर आगामी निर्वाचन में उन प्रतिनिधियों को सम्मिलित करने में सुविधा हो तथा कोई त्रुटि हो तो उसके सुधार हेतु उन्हें तत्काल अवगत कराया जा सके।

संभागीय उपप्रधान व उपमन्त्री महानुभावों से निवेदन है कि अपने क्षेत्र की आर्य समाजों से सम्पर्क कर सभा को देय राशि सभा के **खाता क. 062510001576** में जमा कर रसीद प्राप्त कर प्रतिनिधि चित्र के साथ यथाशीघ्र सभा के पते पर प्रेषित करें तथा **संभागीय उपप्रधान, उपमन्त्री अपना प्रतिवेदन मेरे महू पते पर शीघ्र भेजें।**

प्रकाश आर्य
सभामन्त्री : म.भा.आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

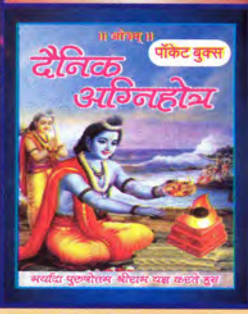

अगली प्रकाशित होने वाली अन्य पुस्तकें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है. ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य,पवित्र और सृष्टिकर्ता है । उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना ■ सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – प्रकाश आर्य, महू

AMIT # 98262-7106